

हिंदी | ENGLISH

राष्ट्र प्रेस

सत्य सर्वोपरि, राष्ट्र सर्वोच्च



शहर

सभी &gt;

होम &gt; International &gt; डेढ़ सदी बाद ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लौटा ईशावास्य उपनिषद, इस बार आचार्य प्रशांत की वाणी में

# ऑक्सफोर्ड में आचार्य प्रशांत ने पढ़ाया ईशावास्य उपनिषद, डेढ़ सदी बाद जीवंत वेदांत की वापसी

द्वारा राष्ट्र प्रेस · 10 जून 2026

शेयर करें:



लेख सुनें

ऑडियो  
सुनना शुरू करने के लिए ...

Lekha (hi-IN)

1x

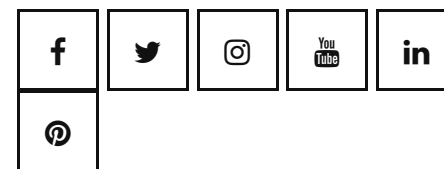


सारांश

डेढ़ सदी पहले जिस ऑक्सफोर्ड ने ईशावास्य उपनिषद को पश्चिम तक पहुँचाया, वहीं अब एक भारतीय दार्शनिक उसे उसके जीवंत अर्थ में लौटा रहा है। आचार्य प्रशांत का तर्क है कि जलवायु संकट से लेकर परमाणु खतरे तक — कोई भी बाहरी नीति तब तक काम नहीं करेगी जब तक उपभोग करने वाला अहम अपरीक्षित रहे।

मुख्य बातें

हमें फॉलो करें



लोकप्रिय पोस्ट



दिल्ली पुलिस का 'ऑपरेशन साइड हॉक': ई-कॉमर्स धोखाधड़ी गिरोह गिरफ्तार, ₹6.5 लाख की ज्वेलरी बरामद

31 मिनट पहले



प्रकाश चिक बराड़क का TMC से इस्तीफा आदिवासी राजनीति में बदलाव का संकेत: बाबूलाल मरांडी

31 मिनट पहले



बेंगलुरु: 6 साल की वेंनिला की हत्या में मां और प्रेमी पर केस, पुलिस जांच में सामने आई कूर दास्तान

38 मिनट पहले

01 आचार्य प्रशांत ने 8 जून 2025 को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के मैनर रोड बिल्डिंग में ईशावास्य उपनिषद के द्वितीय श्लोक पर दार्शनिक सत्र दिया।

02 1879 में प्रोफेसर मैक्स म्यूलर ने इसी ऑक्सफोर्ड से ईशावास्य उपनिषद का पहला अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था — यह सत्र उसी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आयोजित हुआ।

03 सत्र में यूके, यूरोप और अमेरिका के विविध श्रोता उपस्थित रहे; केंद्रीय प्रश्न था — "कर्ता कौन है?" आचार्य प्रशांत ने 30 मई को कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी और 1 जून को लॉर्ड क्रिश रावल के साथ संवाद सत्र में भी भागीदारी की।

04 लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, किंग्स कॉलेज लंदन और 20-28 जून के लंदन क्लाइमेट ऐक्शन वीक में उनकी भागीदारी निर्धारित है।

05 ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ.

06 प्रतिभा राय ने काठमांडू कलिंगा लिटरेरी फेस्टिवल में उन्हें "भारत का पुत्र" कहकर संबोधित किया।

## पूरी खबर

**आचार्य प्रशांत ने 8 जून 2025 को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के मैनर रोड बिल्डिंग स्थित लेक्चर थिएटर में ईशावास्य उपनिषद के द्वितीय श्लोक पर एक विस्तृत दार्शनिक सत्र को संबोधित किया — लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले जिस ऑक्सफोर्ड से प्रोफेसर मैक्स म्यूलर ने 1879 में इस उपनिषद का पहला अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर पश्चिमी जगत को इससे परिचित कराया था, उसी भूमि पर यह वापसी हुई। यह सत्र उस ऐतिहासिक परंपरा की अगली कड़ी के रूप में देखा जा रहा है, जहाँ अब वेदांत बाहरी अध्ययन की वस्तु नहीं, बल्कि जीवंत दर्शन के रूप में प्रस्तुत हुआ।**

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सत्र का महत्त्व

मैक्स म्यूलर ऑक्सफोर्ड में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के प्रथम प्रोफेसर थे और उन्होंने 'सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' श्रृंखला की समूची देखरेख की थी। उसी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस की इमारत के सामने खड़े होकर आचार्य प्रशांत ने कहा, "मैक्स म्यूलर ने इस ग्रंथ को पश्चिम तक पहुंचाने का असाधारण कार्य किया। पर शब्दों को जीवन देना पड़ता है, और जीवन यही क्षण है। आज मैं उपनिषद की उस प्रासंगिकता को सामने रखने आया हूँ, जिसकी आज के संसार को आवश्यकता है।"

जिस मैनर रोड बिल्डिंग में यह सत्र हुआ, वह ऑक्सफोर्ड के अर्थशास्त्र विभाग का केंद्र है और प्रतिष्ठित एटकिंसन मेमोरियल लेक्चर का स्थल रहा है, जहाँ हाल के वर्षों में नोबेल पुरस्कार विजेताओं सहित अर्थशास्त्र, तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जलवायु पर विश्व के अग्रणी विचारक संबोधन दे चुके हैं।

## सत्र का केंद्रीय दार्शनिक तर्क

सत्र का मूल प्रश्न था — "कर्ता कौन है?" आचार्य प्रशांत ने कहा कि उपनिषद कर्म से अधिक उस कर्ता में रुचि रखते हैं जो प्रत्येक विचार, कर्म और अनुभव के पीछे खड़ा रहता है। विद्या और अविद्या के भेद को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि बाहरी जगत का ज्ञान मनुष्य के पास प्रचुर है, परंतु जानने वाले को जानने का कार्य आज भी अधूरा है।



मुंबई, दिल्ली एनसीआर और बंगलुरु दुनिया के टॉप 30 फाइनेंशियल सर्विसेज मार्केट में शामिल: कोलियर्स रिपोर्ट

42 मिनट पहले



भाजपा रहते देश की मूल समस्याएँ नहीं सुलझेंगी: कांग्रेस की आपातकालीन बैठक में तीखा हमला

50 मिनट पहले

## श्रेणि याँ

देश की खबरें  
विश्व समाचार  
व्यापार समाचार  
खेल समाचार  
मनोरंजन समाचार  
विज्ञान और प्रौद्योगिकी समाचार  
स्वास्थ्य समाचार

## शहर की धड़कन

आज की खबरें, शहर के अनुसार।



सभी शहर देखें >

## न्यूज़ लेटर

Subscribe to our newsletter to receive the latest news and updates

Enter your email

उन्होंने कहा, "अहम न केवल दुख भोगता है, वह स्वयं ही दुख है।" उनका तर्क था कि कोई भी कर्म अपने आप में न शुभ है न अशुभ — वह जिस चेतना से उपजता है, वही उसे बंधनकारी या मुक्तिदायी बनाती है। उन्होंने अहम की तुलना एक उपनिवेशक से की जो शरीर को प्रेम से नहीं, अपने स्वार्थ से जीवित रखता है, और कहा, "शरीर एक तथ्य है, अहम एक भूल।"

SUBSCRIBE

## जलवायु संकट और पश्चिमी सभ्यता पर चेतावनी

मीडिया से बातचीत में आचार्य प्रशांत ने कहा कि पश्चिम ने बाहरी जगत में — ब्रह्मांड के अन्वेषण से लेकर परमाणु और शरीर के रहस्यों तक — असाधारण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, फिर भी मानवता आज **छठे बड़े पैमाने पर विलुप्ति के दौर** में है, और यह संकट पूर्णतः मनुष्य का गढ़ा हुआ है। उन्होंने कहा, "बाहर से हम इतिहास में किसी भी समय की तुलना में अधिक समृद्ध और शक्तिशाली हैं। भीतर से हम आज भी आदिम मनुष्य ही हैं।"

उनका मत था कि आत्मज्ञान के बिना पर्यावरण संकट, सांप्रदायिकता, परमाणु युद्ध के खतरे और मानसिक स्वास्थ्य की महामारी — किसी का भी समाधान संभव नहीं। उन्होंने कहा कि कोई शिखर सम्मेलन, कोई संधि या दक्षता में सुधार इस संकट का समाधान नहीं कर सकता क्योंकि ये उस मूल कारक को संबोधित नहीं करते जो संकट को चला रहा है।

## यूके दौर के अन्य महत्वपूर्ण पड़ाव

यह ऑक्सफोर्ड सत्र आचार्य प्रशांत के व्यापक यूके दौर की एक कड़ी है। **30 मई** को उन्होंने **कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी** में, कैम्ब्रिज इंडिया बिजनेस डायलॉग के अंतर्गत, **कैम्ब्रिज जज बिजनेस स्कूल** के प्रोफेसर **जयदीप प्रभु** की अध्यक्षता में अपना दर्शन रखा। **1 जून** को उन्होंने **लॉर्ड क्रिश रावल** (यूके हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य) के साथ जलवायु और पर्यावरण संकट के आंतरिक आयामों पर विस्तृत चर्चा की।

**6 और 7 जून** को **काठमांडू** में आयोजित **चौथे काठमांडू कलिंगा लिटरेरी फेस्टिवल** में लंदन से ऑनलाइन जुड़ते हुए उन्होंने भागीदारी की, जहाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार **डॉ. प्रतिभा राय** ने उन्हें "भारत का पुत्र" कहकर संबोधित किया।

## आगे की योजना

आगामी सप्ताहों में आचार्य प्रशांत **लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (LSE)** और **किंग्स कॉलेज लंदन** में भी सत्र आयोजित करेंगे। **20 से 28 जून** तक चलने वाले **लंदन क्लाइमेट ऐक्शन वीक** — यूरोप के सबसे बड़े स्वतंत्र जलवायु परिवर्तन आयोजन — में भी उनकी भागीदारी निर्धारित है। **प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन** के संस्थापक और **हार्परकॉलिन्स** द्वारा प्रकाशित '**Truth and Apology**' के लेखक आचार्य प्रशांत ने ऑक्सफोर्ड में कहा, "अंतर केवल इतना है कि जब आप इन्हीं उपकरणों को अपने ऊपर लागू करते हैं, तो भीतर से प्रतिरोध उठता है, क्योंकि वहाँ द्रष्टा ही दृश्य बन जाता है।"

संपादकीय दृष्टिकोण

संपादकीय

“**वहाँ अब वही दर्शन अपनी जीवित परंपरा के भीतर से बोल रहा है। परंतु असली परीक्षा यह है कि क्या ऑक्सफोर्ड और LSE जैसे मंचों पर वेदांत की यह उपस्थिति नीति-निर्माण को प्रभावित करती है, या केवल बौद्धिक जिज्ञासा तक सीमित रहती है। जलवायु संकट पर उनका तर्क — कि बाहरी नीतियाँ आंतरिक परिवर्तन के बिना अपर्याप्त हैं — दार्शनिक दृष्टि से सुसंगत है, किंतु नीति-जगत में इसे मापने योग्य ढाँचे में ढालना अभी भी एक खुली चुनौती है।**”

RASHTRAPRESS  
11 जून 2026

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

## आचार्य प्रशांत ने ऑक्सफोर्ड में किस विषय पर सत्र दिया?

आचार्य प्रशांत ने 8 जून 2025 को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के मैनर रोड बिल्डिंग में ईशावास्य उपनिषद के द्वितीय श्लोक पर दार्शनिक सत्र दिया। सत्र का केंद्रीय प्रश्न 'कर्ता कौन है?' था, जिसमें अहम, विद्या-अविद्या और आत्मज्ञान पर विस्तृत विवेचना हुई।

## मैक्स म्यूलर और ऑक्सफोर्ड का ईशावास्य उपनिषद से क्या संबंध है?

प्रोफेसर मैक्स म्यूलर ने 1879 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से 'सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' श्रृंखला के पहले खंड में ईशावास्य उपनिषद का पहला अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कराया था। वे ऑक्सफोर्ड में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के प्रथम प्रोफेसर थे और इस पूरी श्रृंखला की देखरेख उन्होंने ही की थी।

## आचार्य प्रशांत का जलवायु संकट पर क्या दृष्टिकोण है?

आचार्य प्रशांत का तर्क है कि पश्चिमी जलवायु नीति इसलिए अपर्याप्त है क्योंकि वह उपभोग करने वाले अहम को अपरीक्षित छोड़ देती है। उनके अनुसार कोई शिखर सम्मेलन, संधि या तकनीकी दक्षता तब तक कारगर नहीं होगी जब तक आत्मज्ञान और आंतरिक परिवर्तन न हो।

## आचार्य प्रशांत के यूके दौरे में और कौन-से कार्यक्रम शामिल हैं?

यूके दौरे में 30 मई को कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, 1 जून को लॉर्ड क्रिश रावल के साथ संवाद सत्र और 8 जून को ऑक्सफोर्ड सत्र शामिल रहे। आगे लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, किंग्स कॉलेज लंदन और 20 से 28 जून तक लंदन क्लाइमेट ऐक्शन वीक में भागीदारी निर्धारित है।

## आचार्य प्रशांत कौन हैं और उनकी पृष्ठभूमि क्या है?

आचार्य प्रशांत प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन के संस्थापक और हार्वर्ड कॉलेज द्वारा प्रकाशित 'Truth and Apology' के लेखक हैं। वे वेदांत आधारित दार्शनिक दृष्टिकोण से जलवायु संकट, मानसिक स्वास्थ्य और मानवीय चेतना जैसे समकालीन विषयों पर वैश्विक मंचों पर बोलते हैं।

टैग: acharya prashant oxford university lecture 2025 ishavasya upanishad vedanta oxford acharya prashant UK tour cambridge london acharya prashant climate crisis vedanta philosophy max muller sacred books of the east upanishad आचार्य प्रशांत ऑक्सफोर्ड सत्र ईशावास्य उपनिषद वेदांत आचार्य प्रशांत यूके दौरा 2025 वेदांत जलवायु संकट प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन

सिलसिला

## जुड़े बिंदु

इस खबर के पीछे की कड़ियाँ — सबसे नई पहले।

8 बिंदु

नवीनतम 2 दिन पहले 9 जून 2026

दुनिया

### ऑक्सफोर्ड में आचार्य प्रशांत: वेदांत और आत्म-ज्ञान से वैश्विक संकटों का समाधान

द्वारा राष्ट्र प्रेस

3 दिन पहले 8 जून 2026

भारत

### PM मोदी ने एक्स पर साझा किया संस्कृत सूभाषित: प्रकृति-संतुलन ही भारतीय संस्कृति की आत्मा